मेमनों को टिटनेस (धनुष्टंकार) रोग से दूर रखें

डॉ. राजकुमार बेरवाल (MVSc, Ph.D.)

प्रभारी अधिकारी एवं सहायक आचार्य

पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रसार एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)

फोन : 01509-221448, e-mail: vutrcsuratgarh.rajuvas@gmail.com

सम्पर्क सूत्र - डॉ. अनिल घोड़ेला, मो. 99280-22555

RSETI
Rural Self Employment Training Institutes
Powering Rural Entrepreneurship

ओ बी सी ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान

श्रीगंगानगर-335001 (राजस्थान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर-334001 (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

यह रोग मेमनों में ज्यादा होता है। प्रभावित पशु में शरीर की सभी मांसपेशी अकड़ जाती है तथा मृत्यु हो जाती है।

कारण

यह रोग एक अवायुवीय जीवाणु क्लोस्ट्रीडियम टिटेनाइ द्वारा होता है। यह जीवाणु पुरानी गन्दगी मिट्टी व पशुओं के मल में पाया जाता है। शरीर पर लगने वाली चोट या घाव से यह जीवाणु शरीर में प्रवेश करता है। प्राय: यह देखा जाता है कि मेमनों के कान में छल्ला लगाने, बधियाकरण करने, नाभि काटने या नाभि में चोट लगने से होने वाले घाव से जीवाणु आसानी से प्रवेश कर जाते हैं। घाव में संक्रमण के पश्चात जीवाणु जहर पैदा करते हैं। जो शरीर में तंत्रिका तन्तु के सहारे मेरूदण्ड को प्रभावित करते हैं। जिसके फलस्वरूप शरीर की मांसपेशियों में अकड़न आने लगती है। चोट में संक्रमण होने के ४-२१ दिन के बाद लक्षण दिखाई देने लग जाते हैं।

लक्षण

१. मेमने इस रोग के प्रति ज्यादा सुग्राही होते हैं।
२. रोगी मेमने या बकरी की मांसपेश्यिां अकड़ जाती हैं। फलस्वरूप कन व पूंछ कड़े व खड़े हो जाते हैं। गर्दन सीधी व अकड़ जाती है। पैर मुड़ते नहीं हैं।
३. बाहरी वातावरण के लिए रोगी मेमने ज्यादा चौकन्ने हो जाते हैं। जरा सी आवाज या छूने मात्र से प्रभावित होते हैं।
४. बकरी की आंखों में श्लेष्मा बाहर दिखने लगती है।
५. बकरी के जबड़े बन्द हो जाते हैं तथा खाना पानी बिल्कुल बंद कर देते हैं।
६. अन्त में पशु चारों पैरों को फैलाकर पड़े रहते हैं तथा श्वास अवरोध के कारण मर जाते हैं।

निदान

१. लाक्षणिक आधार पर शरीर में अकड़न, मुख का न खुलना, वातावरण के प्रति ज्यादा चौकन्ना होना आदि लक्षणों के आधार पर निदान सम्भव है।
२. घाव से जीवाणु का प्रयोगशाला में पता लगाकर भी निदान किया जता है।

उपचार

१. चोट व घाव को हाइड्रोजन परआक्साइड (एक भाग हाइड्रोजन परआक्साइड घोल को एक भाग पानी में मिलाकर) घोल से साफ करना चाहिए। घाव पर आयोडीन घोल (बीटाडीन, टिन्चर आयोडिन) या पैन्सिलीन की क्रीम लगानी चाहिए।
२. बैन्जाइल पैन्सिलीन के इन्जेक्शन १० मि.ग्रा./कि.ग्रा. के हिसाब से दिन में दो बार लगाना चाहिए।
३. बकरी में टिटेसस होने पर एन्टीटोक्सिन (ए.टी.स) १०,००० से १५,००० यूनिट हर १२ घंटे पर एक या दो दिन लगाने पर लाभ होता है।
४. डाइजीपाम इन्जेक्शन ०.५ मि.ग्रा./कि.ग्रा. वजन के हिसाब से देने पर लक्षणों, विशेषतौर से अकड़न में सुधार आता है।

बचाव

१. चिकित्सा पर खर्चा ज्यादा आता है। इसमें सफलता मिलना भी मुश्किल होता है। अत: रोग के बचाव पर ही पूरा ध्यान देना चाहिए।
२. बाड़ों की पूरी व अच्छी तरह से सफाई रखना चाहिए।
३. सामान्य रूप से सभी चोटों व घावों की सफाई कर, एन्टीसेप्टिक मलहम (बीटाडीन क्रीम) लगाना चाहिए।
४. जन्म के पश्चात नाभि सूत्र को काटने के बाद सूखने तक टिन्चर आयोडीन य बीटाडीन क्रीम का घोल जरूर लगाना चाहिए।
५. टिटेनस का टीकाकरण करना चाहिए।

Scanned with CamScanner